भीलवाड़ा जिले में नगरीकरण और स्त्री–पुरूष अनुपात का भौगोलिक अध्ययन

Dr. Jagphool Meena

Lecturer, Department of Geography
Govt. P.G. College Rajgarh, Alwar, Rajasthan

शोध सारांश

भीलवाड़ा जिले में नगरीकरण और स्त्री–पुरूष अनुपात का भौगोलिक अध्ययन प्रस्तुत पत्र में किया गया है ।इस पत्र में ,भीलवाड़ा जिले में नगरीकरण के वर्तमान स्वरूप और स्त्री–पुरूष अनुपात की स्थिति को स्पस्ट किया गया है । भीलवाड़ा राजस्थान का एक महत्वपूर्ण जिला है । सभ्यता के इतिहास के प्रत्येक युग में नगर सभ्यता एवं संस्कृति के केन्द्र स्थल रहे है ।जिनका मानव के आर्थिक,सामाजिक,सांस्कृतिक तथा राजनीतिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका रही है ।नगरीकरण आर्थिक,सामाजिक प्रगति का सूचक माना जाता है ,एवं स्त्री–पुरूष अनुपात का संतुलन एक महत्वपूर्ण सामाजिक पहलू है । अध्ययन क्षेत्र में नगरीकरण की दर 2001.11 दशक में 23.58 प्रतिशत रही, जो राजस्थान के औसत 29.09 प्रतिशत से कम रही। तथा नगरीय जनसंख्या का प्रतिशत 21.23 प्रतिशत है जबकि राजस्थान में यह कुल जनसंख्या का 33.75 प्रतिशत नगरीकृत है ।भीलवाड़ा जिले का स्त्री–पुरूष अनुपात 973 है ।जबकि राज्य का औसत 928 महिलाए प्रति 1000 पुरूष का है स्त्री–पुरूष अनुपात में अध्ययन क्षेत्र राज्य से आगे है ।इस शोधपत्र में भीलवाड़ा जिले में तहसील स्तर पर नगरीकरण, स्त्री–पुरूष अनुपात दोनो कारको का सूक्ष्म स्तर पर कम और अधिक होने के कारण, एवं समस्याओं का अध्ययन किया गया है ।

शब्द कुंजी :– भीलवाड़ा जिले में ,नगरीकरण, स्त्री–पुरूष ,अनुपात, सामाजिक–आर्थिक, राजनैतिक, विकास, आवास, परिवहन, प्रदूषण, अवशिष्ट,पदार्थ, महिला शहरीकरण, पुरूष शहरीकरण, ग्रामीण, नगरीय ।

परिचय

भीलवाड़ा राजस्थान का एक जिला है ।अध्ययन क्षेत्र में आठ नगरीय कस्बे भीलवाड़ा, गंगापुर, गुलाबपुरा, सहाड़ा, आसिंद, जहाजपुर, माण्डलगढ, बिजौलिया, शाहपुरा है । गत दशक में नगरीय जनसंख्या में तीव्र वृद्धि हुई है , सन 2011में राज्य में नगरीकरण की दर 29.09प्रतिशत है जबकि अध्ययन क्षेत्र में दर 23.58 प्रतियात रही है अध्ययन क्षेत्र में सर्वाधिक नगरीकरण सन 1971 के दशक में हुआ जिसका मुख्य कारण कुछ बड़े गॉवो का नगर का दर्जा देने एवं नगरो में जनसंख्या वृद्धि होना है ।पिछले सालो में ग्रामीण क्षेत्रो में आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न लोगो ने गॉवो को छोड़कर शहरो में अपने मकान बना लिये है । लोगो का शहरो की तरफ पलायन का मुख्य कारण नगरीय सुविधाओ का उपयोग करना है । इसके अलावा मेंहनत मजदूरी व उद्योगो में काम करने वाले लोग शहर में ही बस जाते है ।शिक्षा प्राप्त करने के लिए भी लोग शहरो में आते है । आसिंद, हुरड़ा, सहाड़ा, जहाजपुर, शाहपुरा, बिजोलिया, माण्डलगढ़, तहसील मुख्यालय तथा भीलवाड़ा जिला मुख्यालय होने से नौकरी पेशा लोग शहर में आकर बस गये है ,जिससे नगरीकरण को वृद्धि हुई है ।

भीलवाड़ा की भौगोलिक स्थिति :–

भीलवाड़ा राजस्थान के दक्षिण पूर्वी भाग में $25^0 1'$ से $25^0 58'$ उत्तरी अक्षांश एवं $74^0 1'$ से $75^0 28'$ पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है। उत्तर में अजमेर जिला, दक्षिण में चित्तौड़गढ़, पूर्व में बूंदी और टोंक एवं पश्चिम में राज समन्द जिला स्थित है। पश्चिम से पूर्व तक जिले की कुल लम्बाई 144 किलोमीटर है, जबकि उत्तर से दक्षिण तक इसकी चौड़ाई 104 किमी. है तथा कुल क्षेत्रफल 10455 वर्ग किलोमीटर है, जो राजस्थान के कुल क्षेत्रफल का 3.05 प्रतिशत है। पश्चिमी भाग को छोड़कर सामान्यतः जिला आयता कार है। पूर्वी भाग के मुकाबले में पश्चिमी भाग अधिक चौड़ा है।[1]

प्रशासनिक दृष्टि से भीलवाड़ा जिलें में आठ 8 उपखण्ड, 12 तहसील, 11 पंचायत समिति, 381 ग्राम पंचायते एवं 1693 आबाद राजस्व गाँव है अध्ययन क्षेत्र में 7 नगर पालिकाएँ तथा 8 कस्बे है। जो क्रमशः– भीलवाड़ा, गंगापुर, गुलाबपुरा, आसीन्द, जहाजपुर, माण्डलगढ़, बिजौलिया, शाहपुरा है। तालिका संख्या 1.1 में जिले की प्रशासकीय इकाईयों को दर्शाया गया है।

परम्परागत कथन के अनुसार प्राचीन समय में यहाँ अधिकांश निवासी भील थे। जिनके कारण यह स्थान भीलवाड़ा के नाम से जाना जाने लगा। नाम के विपरित इस क्षेत्र में बहुत कम भील रहते है। ऐसा भी कहा जाता है, कि वर्तमान भीलवाड़ा नगर में एक टकसाल थी, जहाँ पर भीलड़ी नाम के सिक्के ढ़ाले जाते थे इसलिए इस जिले का नाम भीलवाड़ा हो गया।[2]

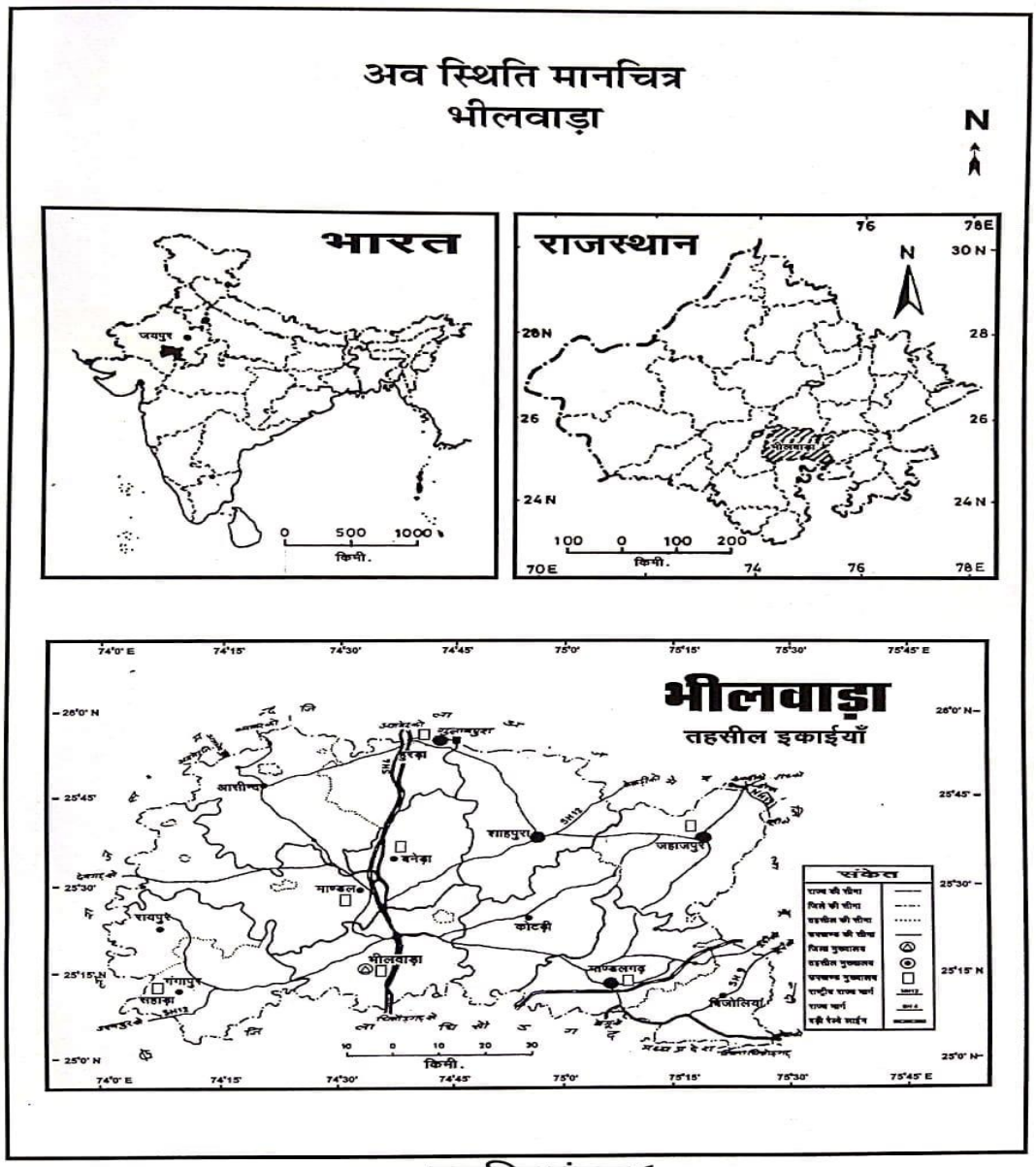

मानचित्र संख्या 1

उददेश्य :–

शोध के उददेश्य निम्न प्रकार है –

1 भीलवाड़ा जिले में नगरीकरण के वर्तमान स्वरूप का अध्ययन करना ।

2 भीलवाड़ा जिले में स्त्री–पुरूष अनुपात के वर्तमान स्वरूप का अध्ययन करना ।

3 नगरीकरण की समस्याओ का अध्ययन करना ।

परिकल्पनाः–

1 भीलवाड़ा जिले में नगरीकरण में वृद्धि हो रही है ।

2 भीलवाड़ा जिले में स्त्री–पुरूष अनुपात घट रहा है ।

अध्ययन विधि :–

प्रस्तुत शोध पत्र में प्राथमिक एवं द्वितीयक आकड़ो का प्रयोग किया गया है प्राथमिक आकड़ो का संग्रह व्यक्गित सम्पर्क, प्रश्नावली एवं अनुसूची के माध्यम से किया गया है ,द्वितीयक आकड़ो का संकलन गैजेटियर, सांख्यिकीय रूपरेखा, सांख्यिकी विभाग, नियोजन विभाग, एवं पुस्तको के माध्यमो से किया है । इस अध्ययन की प्रकृति विश्लेषणात्मक है ।

भीलवाड़ा जिले में नगरीकरण :–

अध्ययन क्षेत्र में आठ नगरीय कस्बे, भीलवाड़ा, गंगापुर, गुलाबपुरा, सहाड़ा, आसीन्द, जहाजपुर, माण्डलगढ़, बिजौलिया, शाहपुरा है।गत दशक में नगरीय जनसंख्या में तीव्र गति से वृद्धि हुई है यदि राज्य की नगरीय जनसंख्या वृद्धि दर से तुलना की जाये तो गत दशक में भीलवाड़ा जिले में राज्यकी अपेक्षा वृद्धि दर अधिक रही है सन् 2011 में राज्य में नगरीकरण की दर 29.09 प्रतिशत है जबकि जिले में यह दर 23.58 प्रतिशत रही है।

अध्ययन क्षेत्र में सर्वाधिक नगरीकरण सन् 1971 के दशक में हुआ जिसका मुख्य कारण कुछः बड़े गाँवों को नगर क्षेत्र का दर्जा देने एवं नगरों में जनसंख्या वृद्धि होना है। पिछले सालों में ग्रामीण क्षेत्रों में आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न लोगों ने गाँवों को छोड़कर शहरों में अपने मकान बना लिये हैं।

शहरों की तरफ पलायन का मुख्य कारण नगरीय सुविधाओं का उपभोग करना है। इसके अलावा मेहनत–मजदूरी व उद्योगों में काम करने वाले लोग शहर में ही बस जाते हैं। आसीन्द, हुरड़ा, सहाड़ा, जहाजपुर, शाहपुरा, बिजौलिया, माण्डलगढ़ तहसील मुख्यालय तथा भीलवाड़ा जिला मुख्यालय होने से नौकरी पेशा लोग शहर में आकर बस गये है। जिससे क्षेत्र में नगरीकरण को बढ़ावा मिला है।

तालिका संख्या 1

भीलवाड़ा एवं राजस्थान नगरीकरण के तुलनात्मक आकड़े

भीलवाड़ा

वर्ष	कुल जनसंख्या	नगरीय जनसंख्या	नगरीय जन. प्रतिशत	नगरीय जन. वृद्धि	प्रतिवर्ग किमी	लिंगानुपात
1941	622128	39812	6.30	20.6	60	943
1951	728522	67505	9.27	69.6	70	935
1961	865797	63433	9.36	6.8	83	909
1971	1054890	116306	11.02	83.4	101	915
1981	1310379	188563	14.39	62.1	125	948
1991	1593128	311144	19.53	65.0	152	957
2001	2013789	414851	20.60	33.3	193	979
2011	2408523	512654	21.28	23.58	230	973

राजस्थान

वर्ष	कुल जनसंख्या	नगरीय जन. प्रतिशत	नगरीय जन. वृद्धि	घनत्व प्रतिवर्ग किमी	लिंगानुपात
1941	2117101	15.27	22.43	41	907
1951	2955275	18.50	39.59	47	919
1961	3281478	16.28	11.04	59	882
1971	4543761	17.63	38.47	75	875
1981	7210508	21.05	58.69	100	877
1991	1006703	22.88	39.62	129	879
2001	13205444	23.38	31.17	165	890
2011	17048085	33.75	29.09	200	928

स्रोत – जनगणना प्रतिवेदन 2011 भीलवाड़ा

कुल जनसंख्या के सन्दर्भ में शहरीकरण

भीलावाड़ा जिले में पिछले दशक में नगरीकरण 23.58 प्रतिशत की दर से बढ़ा है। सन् 2011 की कुल जनसंख्या में नगरीय जनसंख्या का 21.28 प्रतिशत पाया जाता है। तालिका संख्या 2 एवं मानचित्र संख्या 1 (A) से स्पष्ट है कि अध्ययन क्षेत्र में सबसे अधिक नगरीय जनसंख्या भीलवाड़ा तहसील में 70.12 प्रतिशत मिलती है। जिसका मुख्य कारण जिला मुख्यालय पर उपलब्ध जन सुविधाएँ, रोजगार तथा ग्रामीण क्षेत्रों से जनसंख्या का शहर की ओर पलायन करना। दूसरे स्थान पर हुरड़ा तहसील में 21.60 प्रतिशत भाग नगरीय जनसंख्या है। शाहपुरा 17.15 प्रतिशत, बिजौलिया 15.85 प्रतिशत, सहाड़ा 15.23 प्रतिशत माण्डलगढ़ 13.68 प्रतिशत, जहाजपुर 10.45 प्रतिशत भाग नगरीय जनसंख्या है।

जिले में सबसे कम नगरीय जनसंख्या आसीन्द तहसील में 6.92 प्रतिशत मिलती है। क्योंकि इस क्षेत्र में अधिकांश जनसंख्या कृषि कार्य करती है अतः लोग गाँवों में अधिक निवास करते है माण्डल तहसील को 2001 की जनगणना में ग्रामीण क्षेत्र में शामिल कर दिया है एवं बनेड़ा, रायपुर, कोटड़ी तहसीलों में ग्रामीण क्षेत्र होने के कारण यहाँ नगरीय जनसंख्या नहीं मिलती है। भीलवाड़ा तथा हुरड़ा तहसील को छोड़कर क्षेत्र में शहरीकरण का प्रतिशत कम पाया जाता है जो कि क्षेत्र का आर्थिक–सामाजिक जीवन स्तर के पिछड़ेपन का द्योतक है। क्योंकि आर्थिक विकास और आमदनी बढ़ने पर शहरीकरण की दर भी बढ़ती है जिसे विकास का मापदण्ड समझा जाता है।

तालिका संख्या 2
भीलवाड़ा जिले में नगरीय जनसंख्या 2011
नगरी जनसंख्या प्रतिशत में

क्र.स.	नाम तहसील	जनसंख्या 2011	पुरूष	महिला	योग
1	आसीन्द	239760	3.52	3.40	6.92
2	हुरड़ा	111428	11.77	9.83	21.60
3	शाहपुरा	207020	8.64	8.51	17.15
4	जहाजपुर	196872	5.35	5.10	10.45
5	माण्डल	233399	–	–	–
6	बनेड़ा	123714	–	–	–
7	भीलवाड़ा	359483	36.53	33.62	70.12
8	रायपुर	97869	–	–	–
9	सहाड़ा	116309	7.88	7.35	15.23
10	कोटड़ी	174011	–	–	–
11	माण्डलगढ़	253347	6.98	6.70	13.68
12	बिजौलिया	98640	8.20	7.65	15.85
	भीलवाड़ा जिला	2408523	11.01	10.26	21.28

स्रोत :– जनगणना प्रतिवेदन 2011 भीलवाड़ा

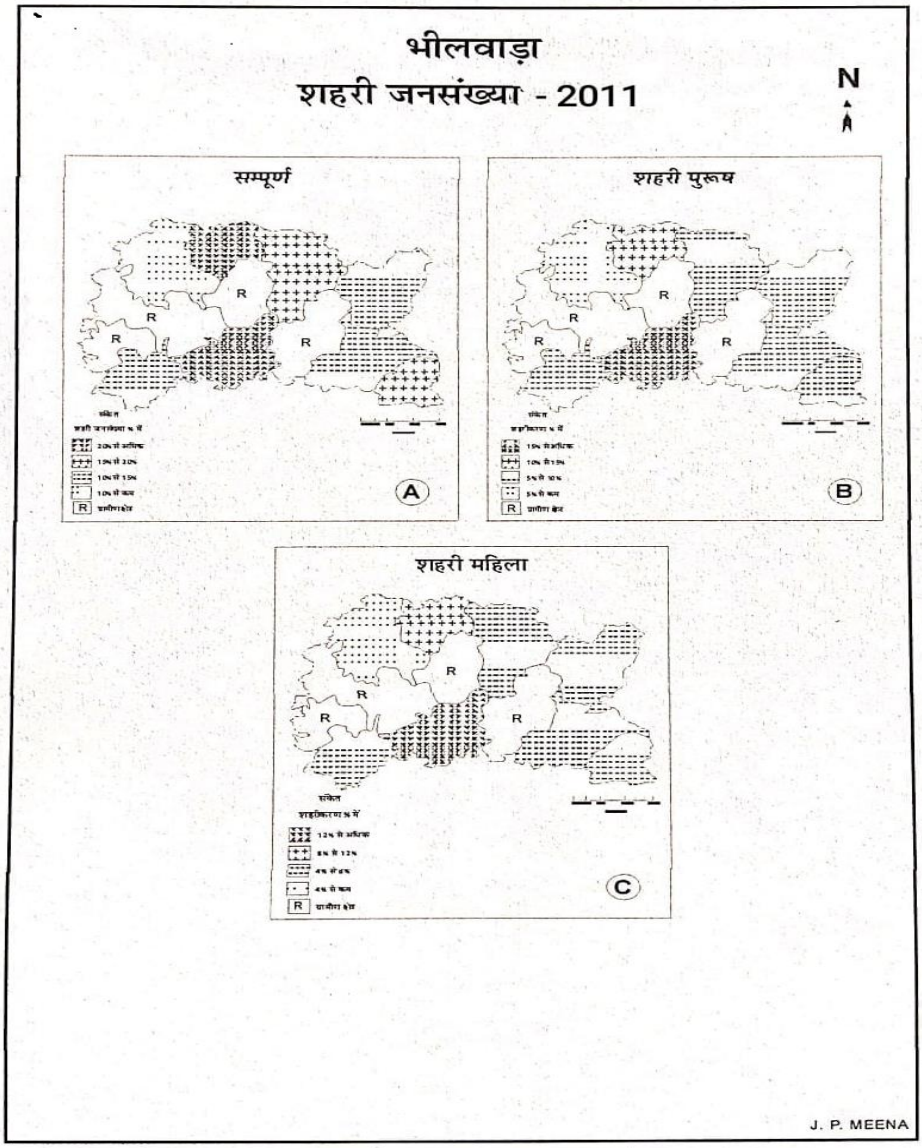

मानचित्र संख्या 1

2 कुल जनसंख्या के सन्दर्भ में पुरूष जनसंख्या शहरीकरण

अध्ययन क्षेत्र की पुरूष जनसंख्या शहरीकरण को तालिका संख्या 2 एवं मानचित्र संख्या 1 (बी) में दर्शाया गया है सन् 2011 की जनगणना के अनुसार शहरी पुरूषों का सबसे अधिक भाग भीलवाड़ा तहसील एंव जिला मुख्यालय पर 36.53 प्रतिशत पाया जाता है। जिसका प्रमुख कारण रोजगार, उद्योग धन्धों के स्थापित होना, सरकारी कार्यालयों एवं जनसुविधाओं के कारण लोग शहरों में बस गये है। दूसरा हुरड़ा तहसील 11.77 प्रतिशत, शाहपुरा 8.64 प्रतिशत, बिजौलिया 8.20 प्रतिशत, सहाड़ा 7.88 प्रतिशत माण्डलगढ़ 6.98 प्रतिशत, जहाजपुर 5.35 प्रतिशत पुरूष जनसंख्या शहरों में निवास करती है। सबसे कम पुरूष शहरीकरण 3.52 प्रतिशत आसीन्द में पाया जाता है। जो कि आर्थिक एवं सामाजिक रूप से पिछड़ेपन का द्योतक है। इस तहसील में उद्योगों का अभाव है, तथा अधिकांश लोग कृषि कार्य करते है इसलिए में गाँवों में ही निवास करते हैं।

3 कुल जनसंख्या के सन्दर्भ में महिला जनसंख्या शहरीकरण

अध्ययन क्षेत्र की महिला जनसंख्या शहरीकरण को तालिका संख्या 2 एवं मानचित्र संख्या 1(C) में दर्शाया गया है। सन् 2011 की जनगणना के अनुसार जिले में 10.26 प्रतिशत महिलायें शहरी क्षेत्र में निवास करती है। सबसे अधिक महिला जनसंख्या शहरीकरण 33.62 प्रतिशत भीलवाड़ा तहसील में पाया जाता है। क्योंकि जिला मुख्यालय पर जनसुविधाओं एवं रोजगार उपलब्धता इसका कारण है! तथा दूसरा स्थान हुरड़ा तहसील 9.83 प्रतिशत, शाहपुरा 8.51 प्रतिशत, बिजौलिया 7.65 प्रतिशत, सहाड़ा 7.35 प्रतिशत माण्डलगढ़ 6.70 प्रतिशत, जहाजपुर 5.10 प्रतिशत महिला शहरीकरण मिलता है। पुरूषों की भाँति सबसे कम महिला जनसंख्या शहरीकरण आसीन्द में 3.40 प्रतिशत पाया जाता है।

4 स्त्री पुरूष अनुपात

स्त्री पुरूष अनुपात का अर्थ किसी जनसंख्या में स्त्रियों और पुरूषों का संघटन से है । इसकी माप लिंगापुपात या यौन अनुपात द्वारा की जाती है यह अनुपात प्रति हजार पुरूषों पर स्त्रियों की संख्या को बताता है किसी क्षेत्र की सामाजिक स्थिति तथा अर्थव्यवस्था में स्त्री – पुरूष अनुपात की महत्वपूर्ण भूमिका पायी जाती है।[1] अध्ययन क्षेत्र में सन् 2011 की जनगणना के अनुसार 1220736 पुरूष तथा 1187787 महिलाएँ तथा स्त्री पुरूष अनुपात 973 है जो राज्य के अनुपात 922 से अधिक है। जिले के स्त्री पुरूष अनुपात को तालिका संख्या .3 तथा मानचित्र संख्या 2(A) में दर्शाया गया है सबसे अधिक स्त्री पुरूष अनुपात सहाड़ा तहसील 1031 महिलाएँ है क्योंकि अधिकाश जनसंख्या कृषि कार्य करती है और साक्षरता दर भी कम पाई जाती है यहाँ से पुरूष शहरो में रोजगार के लिए चले जाते है जो शहरों में अनुपात को कम तथा ग्रमीण क्षेत्रों में अनुपात को बढ़ा देते है। दूसरा स्थान माण्डल तहसील 1036, रायपुर 1028, आसीन्द 1001, शाहपुरा 966, कोटड़ी 965, माण्डलगढ़ 959, जहाजपुर 942 स्त्रियाँ है सबसे कम स्त्री–पुरूष अनुपात भीलवाड़ा तहसील में 941 स्त्रियाँ पाई जाती है क्योंकि यहाँ बहार से आयी पुरूष जनसंख्या प्रवास का इस पर प्रभाव पड़ता है। तथा शहरों में शिक्षा स्तर उच्च होने से लोग बालिका भ्रूण परीक्षण जैसे अमानवीय कृत्यो के कारण अनुपात में कमी पाई जाती है।

तालिका संख्या 3
भीलवाड़ा जिले में लिंगानुपात 2011

क्र. सं.	नाम तहसील	ग्रामीण	नगरीय	योग
1	आसीन्द	1001	968	1001
2	हुरड़ा	960	905	960
3	शाहपुरा	966	984	966
4	बनेड़ा	985	–	985
5	माण्डल	1036	–	1036
6	रायपुर	1028	–	1028
7	सहाड़ा	1031	960	1031
8	भीलवाड़ा	978	921	941
9	कोटडी	965	–	965
10	जहाजपुर	942	953	942
11	माण्डलगढ़	959	964	959
12	बिजौलिया	964	960	964
	भीलवाड़ा जिला	984	932	973

स्रोत :– जिला जनगणना प्रतिवेदन 2011 भीलवाड़ा

6 ग्रामीण स्त्री पुरूष अनुपात

भीलवाड़ा जिलें में ग्रामीण स्त्री पुरूष अनुपात सन् 2011 की जनगणना के अनुसार तालिका संख्या 3 एवं मानचित्र संख्या 2 (B) में दर्शाया गया है।

क्षेत्र में 12 तहसीलों में से चार में स्त्री पुरूष अनुपात 1000 से अधिक पाया जाता है सबसे अधिक ग्रामीण स्त्री–पुरूष अनुपात सहाड़ा तहसील 1031 पाया जाता है तत्पश्चात रायपुर, 1028, माण्डल 1036, आसीन्द 1001 पाया जाता है मध्यम स्त्री–पुरूष अनुपात बनेड़ा 985, भीलवाड़ा 941, कोटड़ी 965, शाहपुरा 966 हुरड़ा 960, माण्डलगढ़ 959, जहाजपुर 942 स्त्रियाँ प्रति हजार पुरूषों पर पाई जाती है। जबकि सबसे कम स्त्री–पुरूष अनुपात बिजौलिया तहसील में 964 पाया जाता है

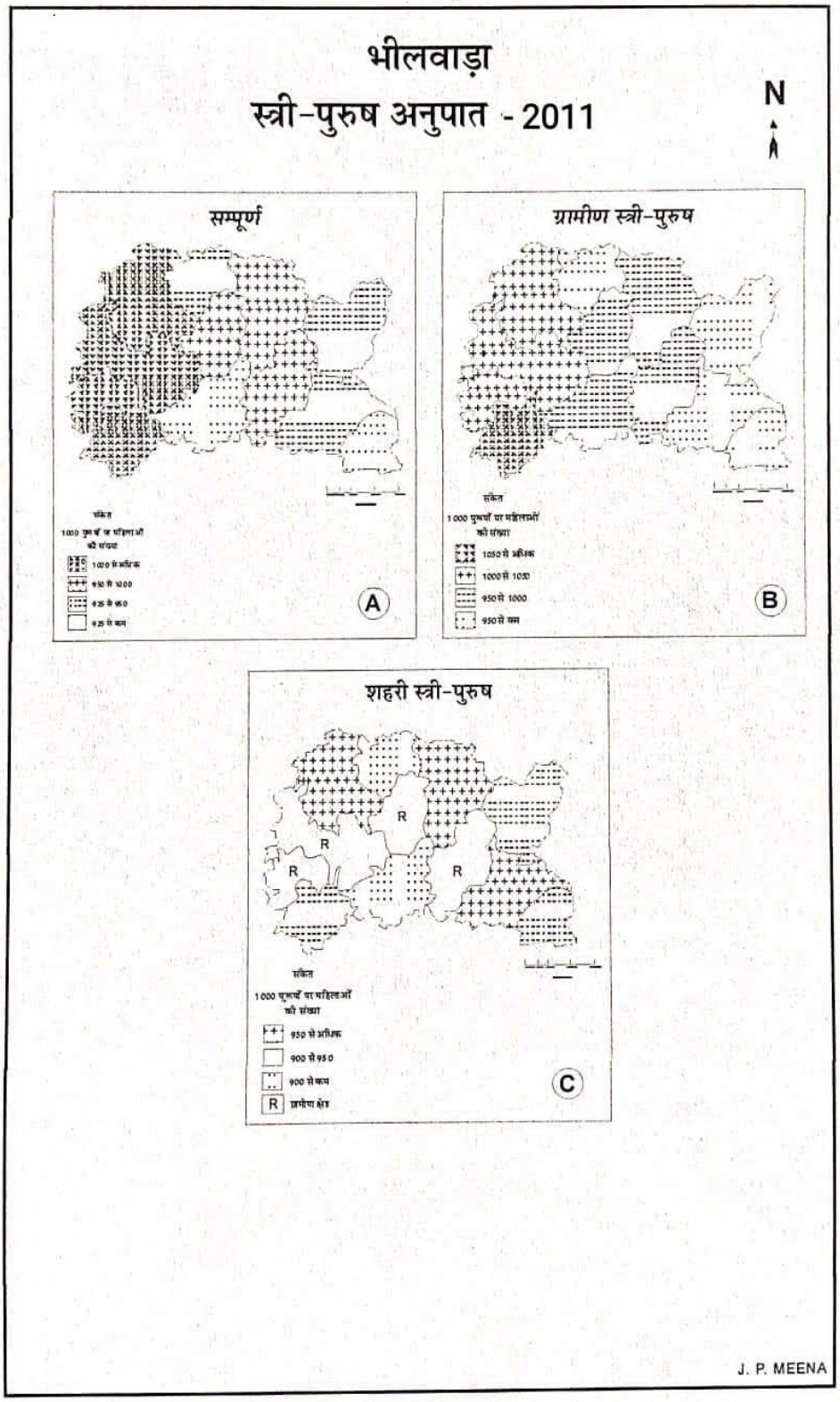

मानचित्र संख्या 2

7 शहरी स्त्री पुरूष अनुपात

अध्ययन क्षेत्र में ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना में शहरी स्त्री–पुरूष अनुपात कम पाया जाता है! क्योंकि गाँवों में पुरूष जनसंख्या का पलायन एवं उच्च शिक्षा का स्तर का स्त्री–पुरूष अनुपात पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। शहरी क्षेत्र स्त्री–पुरूष अनुपात को तालिका संख्या 3 तथा मानचित्र संख्या 2(C) में दर्शाया गया है सबसे अधिक शहरी स्त्री–पुरूष अनुपातशाहपुरा 984 स्त्रियाँ मिलता है। इसके बाद आसीन्द 968,माण्डलगढ़ 964, सहाड़ा 960, बिजौलिया 960,जहाजपुर 953, स्त्रियाँ प्रति हजार पुरूषों पर मिलती है। सबसे कम शहरी स्त्री–पुरूष अनुपात हुरड़ा में 905 स्त्रियाँ पाया जाता हैं।

5.7 शहरीकरण के दोष

नगरीय जनसंख्या में प्रायः प्राकृतिक वृद्धि की अपेक्षा नगरोन्मुख ग्रामीण प्रवास से अधिक वृद्धि हो जाती है। नये नगरो की स्थापना तथा ग्रामों के नगरों के रूप में कायान्तरण से भी नगरीय जनसंख्या में उल्लेखनीय वृद्धि होती है। किन्तु जनसंख्या वृद्धि के अनुपात में नागरिक सुविधाओं आवास, रोजगार, विद्युत एवं जल आपूर्ति, परिवहन, सफाई, स्वास्थ्य एवं अन्य जनोपयोगी सुविधाओं में बढोतरी नहीं हो पायी है। जिसके कारण नगरवासियों के सामान्य जीवन स्तर में गिरावट आयी है। बढ़ते शहरीकरण से निम्नाकिंत समस्याएँ उत्पन्न हो रही है।[1]

(1) स्थान की समस्या

नगरों में स्थापित होने वाले नये–नये उद्योग–धंधो, स्टोरो, दुकानों, कार्यालय, पार्को, आवास गृहों आदि के लिए अधिकाधिक भूमि की आवश्यकता पड़ती है। जिसकी पूर्ति के लिए नगर की बाह्य सीमा का प्रसार ग्रामीण क्षेत्रो की ओर होता है इस प्रकार सारी कृषि योग्य भूमि निर्मित क्षेत्र के रूप में परिवर्तित हो जाती है। नगरों में जनसंख्या वृद्धि से उत्पन्न स्थानाभाव के कारण भूमि का मूल्य अत्यधिक बढ़ गया है। इससे शहरों में दुकान, कार्यालय तथा अन्य सामाजिक कार्यो के लिए भूमि प्राप्त करना कठिन हो गया है।

(2) आवास की समस्या

नगरों में प्रतिवर्ष बड़ी संख्या में लोग ग्रामीण क्षेत्रों से आकार रहने लगते है जिससे शहरों की जनसंख्या तीव्र गति से बढ़ रही है किन्तु जनसंख्या वृद्धि के अनुपात में नगरो में आवासों की संख्या नही बढ़ पाती हैं। जिससे आवासों की समस्या आती है अल्पआय अथवा बेरोजगारी के कारण प्रायः शहरों में हजारों – लाखों लोग गंदी बस्तियों तथा झुग्गी–झोपड़ियों और फुटपाथों पर सोने के लिए विवश होते है।

(3) परिवहन की समस्या

नगरीय विस्तार तथा बढ़ते नगरीकरण ने परिवहन सम्बंधी जटिल समस्याएँ उत्पन्न कर दी हैं। अधिकांश नगरों के आंतरिक भागों में सड़कों के कम चौड़े होने तथा वाहनों की अधिकता से इतनी अधिक भीड़ जमा हो जाती है कि कभी–कभी घण्टों यातायात अवरूद्ध हो जाता है। नगरों के केन्द्रीय व्यापार क्षेत्र (C.B.D.) या चौक क्षेत्र में वाहन नही पहुँच पाते हैं और वहाँ पैदल चलना ही एक मात्र उपाय रह जाता हैं।

(4) जल आपूर्ति की समस्या

नगरों में विशाल जनसंख्या के लिए शुद्ध पेय जल की आपूर्ति कर पाना नगर प्रशासन के लिए एक बड़ी जिम्मेदारी और चुनौती भरा काम होता हैं। पेयजल के अलावा उद्योगों के लिए काफी जल की आवश्यकता होती है अनेक बार गंदे जल की आपूर्ति हो जाने पर हैजा, पीलिया आदि बीमारियाँ भंयकर तथा महामारी के रूप में फैल जाती हैं।

(5) विद्युत आपूर्ति की समस्या :–

विद्युत आधुनिक नगरों की प्राण है इसके अभाव में शहर मृत प्रायः हो जाते हैं। घरों से उद्योगों तक सभी मशीन उपकरण विद्युत से चलते हैं। शहरो में निरंतर बढ़ती आबादी तथा उद्योंगों की बढती संख्या के अनुसार विद्युत की मांग को पूरा करना अत्यन्त कठिन कार्य है क्योंकि विद्युत उत्पादन सीमित मात्रा में हो पाता हैं।

(6) नगरीय अवशिष्ट पदार्थो के विसर्जन की समस्या

शहरों में मल – मूत्र, कूड़ा करकट, रसायनयुक्त जल आदि अवशिष्ट पदार्थो के निकास की बड़ी समस्या पाई जाती है। अधिकाशतः नगरों के गन्दे जल को निकटवर्ती नदियों में गिराया जाता है। यह जल पेड़ पौधो के लिए भी हानिकारक होता है और यदि रिसकर भूमिगत जल से मिलता है तो भूमिगत जल भी दूषित हो जाता है खुली सीवरेज नालियों से दुर्गन्ध निकलती रहती है, घरों से निकलने वाले कूड़ा करकट को जिन्हे प्रायः सड़कों पर पॉलीथीन में भरकर फैंक दिया जाता है जो नालियों में फसकर सीवरेज को बन्द कर देता है।

(7) पर्यावरण प्रदूषण की समस्या

शहरों में पर्यावरण के प्रदूषित होने की समस्या सामान्य है इनमें वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण आदि प्रमुख है नगरों के सूक्ष्म जलवायविक अध्ययनों से ज्ञात हुआ है कि नगरों के मध्यवर्ती भागों का तापमान अन्य भागों की तुलना में 2^0से $3C^0$ तक बढ़ जाता है जिसका मुख्य कारण रसोई, यातायात, व कारखानों से निकलने वाला धुआँ है, पेड़ों तथा वनस्पतियों के अभाव में वायु प्रदूषण कम नहीं हो पाता है, नगरों में जल प्रदूषण की समस्या भी गम्भीर है। नगरों से विसर्जित जल जहाँ तक रिसकर बहता हुआ पहुँचाता है वहाँ का जल प्रदूषित हो जाता है नगर का गंदा जल जिस नदी, झील तालाब में गिराया जाता है वहाँ का जल विषैला हो जाता है जो मानव उपयोग या किसी जीव के लिए हानिकारक होता है।

नगर प्रायः कोलाहलमय होता है जहाँ रात–दिन शोर होते रहते है तेज लाउड़स्पीकरों के बजने, मोटर वाहनों की आवाज, कारखानों की मशीनों के चलने से शोर, रेलगाड़ियों की आवाज आदि नगरों में ध्वनि प्रदूषण को जन्म देती है। नगर में अत्यधिक शोर–शराबे से बहरेपन, अनिद्रा, सिरदर्द, मानसिक अशान्ति एवं उच्च रक्तचाप, घबराहट आदि विभिन्न प्रकार की बीमारियाँ उत्पन्न हो जाती है।

संदर्भ सूची

1. मौर्य एस.डी. ''2013'' जनसंख्या भूगोल, शारदा पुस्तक भवन इलाहाबाद पृष्ठ 195–374
2. बंसल एस.सी. 2012 ''नगरीय भूगोल'' मीनाक्षी प्रकाशन मेरठ पृष्ठ 172

3. चौहान गौतम 2013 '' भारत'' रस्तोगी पब्लिकेशन्स मेरठ पृष्ठ 507–530
4. जैन एस.के.''1997'' नगरीय भूगोल यूनिवर्सिटी पब्लिकेशन्स जयपुर
5. चांदना. आर.सी. 2014 जनसंख्या भूगोल, कल्याणी पब्लिशर्स नई दिल्ली
6. हीरालाल '1989' '' जनसंख्या भूगोल '', वसुंधरा प्रकाशन गोरखपुर
7. भल्ला एल.आर. ''2014'' राजस्थान का भूगोल कुलदीप प्रकाशन, अजमेर